RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

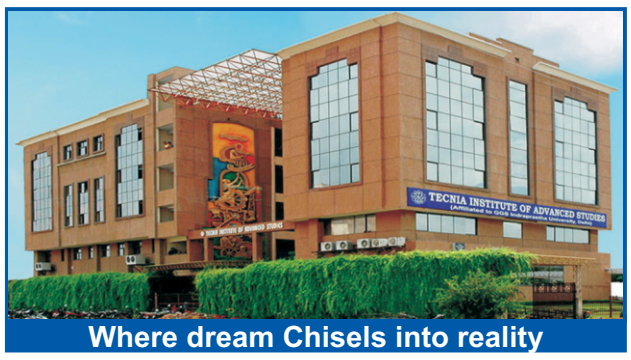

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · DECEMBER 2021 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

नये भारत के निर्माता थे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी

भारतीय राजनीति का महानायक, भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज नेता, प्रखर कवि, वक्ता और पत्रकार श्री अटल विहारी वाजपेयी की जन्म जयंती 25 दिसंबर को भारत सरकार प्रतिवर्ष सुशासन दिवस के रूप में मनाती है। इस वर्ष हम उनका 97वां जन्मोत्सव मना रहे हैं, जिन्होंने न केवल देश के लोगों का दिल जीता है, बल्कि विरोधियों के दिल में भी जगह बनाकर, अमिट यादों को जन–जन के हृदय में स्थापित कर हमसे जुदा हुए थे। अटलजी यह नाम भारतीय इतिहास का एक ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ है, जिससे एक सशक्त जननायक, स्वप्नदर्शी राजनायक, आदर्श चिन्तक, नये भारत के निर्माता, कुशल प्रशासक, दार्शनिक के साथ–साथ भारत को एक खास रंग देने की महक उठती है। उनके व्यक्तित्व के इतने रूप हैं, इतने आयाम हैं, इतने रंग है, इतने दृष्टिकोण हैं, जिनमें वे व्यक्ति और नायक हैं, दार्शनिक और चिंतक हैं, प्रबुद्ध और प्रधान है, वक्ता और नेता हैं, शासक एवं लोकतंत्र उन्नायक हैं।तीन बार देश के प्रधानमंत्री रहे अटल विहारी वाजपेयी ने पांच दशक तक सक्रिय राजनीति की, अनेक पदों पर रहे, केंद्रीय विदेश मंत्री व प्रधानमंत्री– पर वे सदा दूसरों से भिन्न रहे, अनूठे रहे। घाल–मेल से दूर। भ्रष्ट राजनीति में बेदाग। विचारों में निडर। टूटते मूल्यों में अडिग। घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। वे भारत के इतिहास में उन चुनिंदा नेताओं में शामिल हैं जिन्होंने सिर्फ अपने नाम, व्यक्तित्व और करिश्मे के बूते पर न केवल सरकार बनाई बल्कि एक नयी सोच की राजनीति को पनपाया, पारदर्शी एवं सुशासन को सुदृढ़ किया।

विलक्षण प्रतिभा, राजनीतिक कौशल, कुशल नेतृत्व क्षमता, बेवाक सोच, निर्णय क्षमता, दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता के कारण कांग्रेस के सभी नेता उनका लोहा मानते रहे। वाजपेयीजी बेहद नम्र इंसान थे और वह अहंकार से कोसों दूर थे। उनके प्रभावी एवं बेवाक व्यक्तित्व से पूर्व प्रधानमंत्री नेहरू भी प्रभावित थे और उन्होंने कहा था कि अटलजी एक दिन भारत के प्रधानमंत्री जरूर बनेंगे। आज भारतीय जनता पार्टी की मजबूती का जो धरातल बना है, वह उन्हीं की देन है। 1977 में जनता पार्टी सरकार में उन्हें विदेश मंत्री बनाया गया। इस दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन में उन्होंने हिंदी में भाषण दिया और वे इसे अपने जीवन का सबसे सुखद क्षण बताते थे। 1980 में वे बीजेपी के संस्थापक सदस्य रहे। वे संसद में बहुत प्रभावशाली वक्ता के रूप में जाने जाते रहे हैं और महत्वपूर्ण मुद्दे पर उनके भाषण खासे गौर से सुने जाते रहे हैं, जो भारत के संसदीय इतिहास की अमूल्य धरोहर है।

उत्तर प्रदेश में आगरा जनपद के प्राचीन स्थान बटेश्वर के मूल निवासी पण्डित कृष्ण बिहारी वाजपेयी मध्य प्रदेश की ग्वालियर रियासत में अध्यापक थे। वहीं शिन्दे की छावनी में 25 दिसंबर 1924 को ब्रह्ममुहूर्त में उनकी सहधर्मिणी कृष्णा वाजपेयी की कोख से अटलजी का जन्म हुआ था। महात्मा रामचन्द्र वीर द्वारा रचित अमर कृति 'विजय पताका' पढ़कर अटलजी के जीवन की दिशा ही बदल गयी। छात्र जीवन से वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने और तभी से राष्ट्रीय स्तर की वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति का पाठ तो पढ़ा ही, साथ–साथ पाञ्चजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी कुशलतापूर्वक करते रहे। अटलजी ने किशोर वय में ही एक अद्भुत कविता लिखी थी–हिन्दू तन–मन हिन्दू जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय, जिससे यह पता चलता है कि बचपन से ही उनका रुझान देश हित, राष्ट्रीयता एवं हिन्दुत्व की तरफ था। राजनीति के साथ–साथ समष्टि एवं राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता, जिजीविषा, व्यापक दृष्टि आद्योपान्त प्रकट होती ही रही है। उनके संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियाँ, राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, जेल–जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति से जुड़े विचार उनके काव्य में सदैव ही दिखाई देते थे।

अटल विहारी वाजपेयी 16 मई 1996 को पहली बार प्रधानमंत्री बने, लेकिन लोकसभा में बहुमत साबित न कर पाने की वजह से 31 मई 1996 को उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। इसके बाद 1998 तक वे लोकसभा में विपक्ष के नेता रहे। 1999 में हुए चुनाव राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के साझा घोषणापत्र पर लड़े गए और इन चुनावों में वाजपेयी के नेतृत्व को एक प्रमुख मुद्दा बनाया गया। गठबंधन को बहुमत हासिल हुआ और वाजपेयी ने एक बार फिर प्रधानमंत्री की कुर्सी संभाली। एनडीए का नेतृत्व करते हुए मार्च 1998 से मई 2004 तक, छह साल भारत के प्रधानमंत्री रहे। इस दौरान उनकी सरकार ने 11 और 13 मई 1998 को पोखरण में पाँच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट करके भारत को परमाणु शक्ति संपन्न देश घोषित कर दिया। इस कदम से उन्होंने भारत को निर्विवाद रूप से विश्व मानचित्र पर एक सुदृढ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। यह सब इतनी गोपनीयता से किया गया कि अति विकसित जासूसी उपग्रहों व तकनीकी से संपन्न पश्चिमी देशों को इसकी भनक तक नहीं लगी। यही नहीं इसके बाद पश्चिमी देशों द्वारा भारत पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए लेकिन वाजपेयी सरकार ने सबका दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए आर्थिक विकास की ऊचाइयों को छुआ।वाजपेयीजी ने पडौसी देश पाकिस्तान के साथ रिश्तों को सौहार्दपूर्ण बनाने की दृष्टि से भी अनेक उपक्रम किये। 19 फरवरी 1999 को सदा–ए–सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरू की गई। कुछ ही समय पश्चात् पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया। अटल सरकार ने पाकिस्तान की सीमा का उल्लंघन न करने की अंतर्राष्ट्रीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किंतु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया।

अटल विहारी वाजपेयी चाहे प्रधानमन्त्री के पद पर रहे हों या नेता प्रतिपक्ष– बेशक देश की बात हो या क्रान्तिकारियों की, या फिर उनकी अपनी ही कविताओं की, नपी–तुली और बेवाक टिप्पणी करने में अटलजी कभी नहीं चूके। भारत को लेकर उनकी स्वतंत्र सोच एवं दृष्टि रही है–ऐसा भारत जो भूख, भय, निरक्षरता और अभाव से मुक्त हो। उनकी कविता जंग का ऐलान है, पराजय की प्रस्तावना नहीं। वह हारे हुए सिपाही का नैराश्य–निनाद नहीं, जूझते योद्धा का जय–संकल्प है। वह निराशा का स्वर नहीं, आत्मविश्वास का जयघोष है। उन्होंने विज्ञान की शक्ति को बढ़ावा देने के लिए लाल बहादुर शास्त्री के नारे 'जय जवान जय किसान' में बदलाव किया और 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान' का नारा दिया। वे जितने कद्दावर के राजनीतिज्ञ थे उतने ही गहन आध्यात्मिक भी थे। उन्होंने राजनीतिक समस्याओं के अतिरिक्त धार्मिक तथा सांस्कृतिक विषयों पर भी साधिकार कलम चलाई, एक नई दृष्टि एवं दिशा दी। इस दृष्टि से वे एक महान् राष्ट्रनायक, साहित्यकार, विचारक, महामनीषी एवं चिन्तक थे।

इस शताब्दी के भारत के 'महान सपूतों' की सूची में कुछ नाम हैं जो अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं। अटल विहारी वाजपेयी का नाम प्रथम पंक्ति में होगा। मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे वाजपेयीजी से मिलने के अनेक अवसर मिले, रायसीना हिल पर अणुव्रत आन्दोलन एवं आचार्य तुलसी के कार्यक्रमों के सिलसिले में अनेक बार मिला। प्रधानमंत्री रहते 7 रेडक्रोस रोड पर तीन–चार मुलाकातें हुई। एक बार उनके जन्म दिन पर कृष्णा मेनन मार्ग पर भी उनके दर्शनों का दुर्लभ अवसर मिला। उनमें गजब का अल्हड़पन एवं फक्कड़पन था। वे हमेशा बेपरवाह और निश्चिन्त दिखाई पड़ते थे, प्रायः लोगों से घिरे रहते थे और हंसते–हंसाते रहते थे। उनके जीवन के सारे सिद्धांत मानवीयता एवं राष्ट्रीयता की गहराई ये जुड़े थे और उस पर वे अटल भी रहते थे। किन्तु किसी भी प्रकार की रूढ़ि या पूर्वाग्रह उन्हें छू तक नहीं पाता। वे हर प्रकार से मुक्त स्वभाव के थे और यह मुक्त स्वरूप भीतर की मुक्ति का प्रकट रूप है।

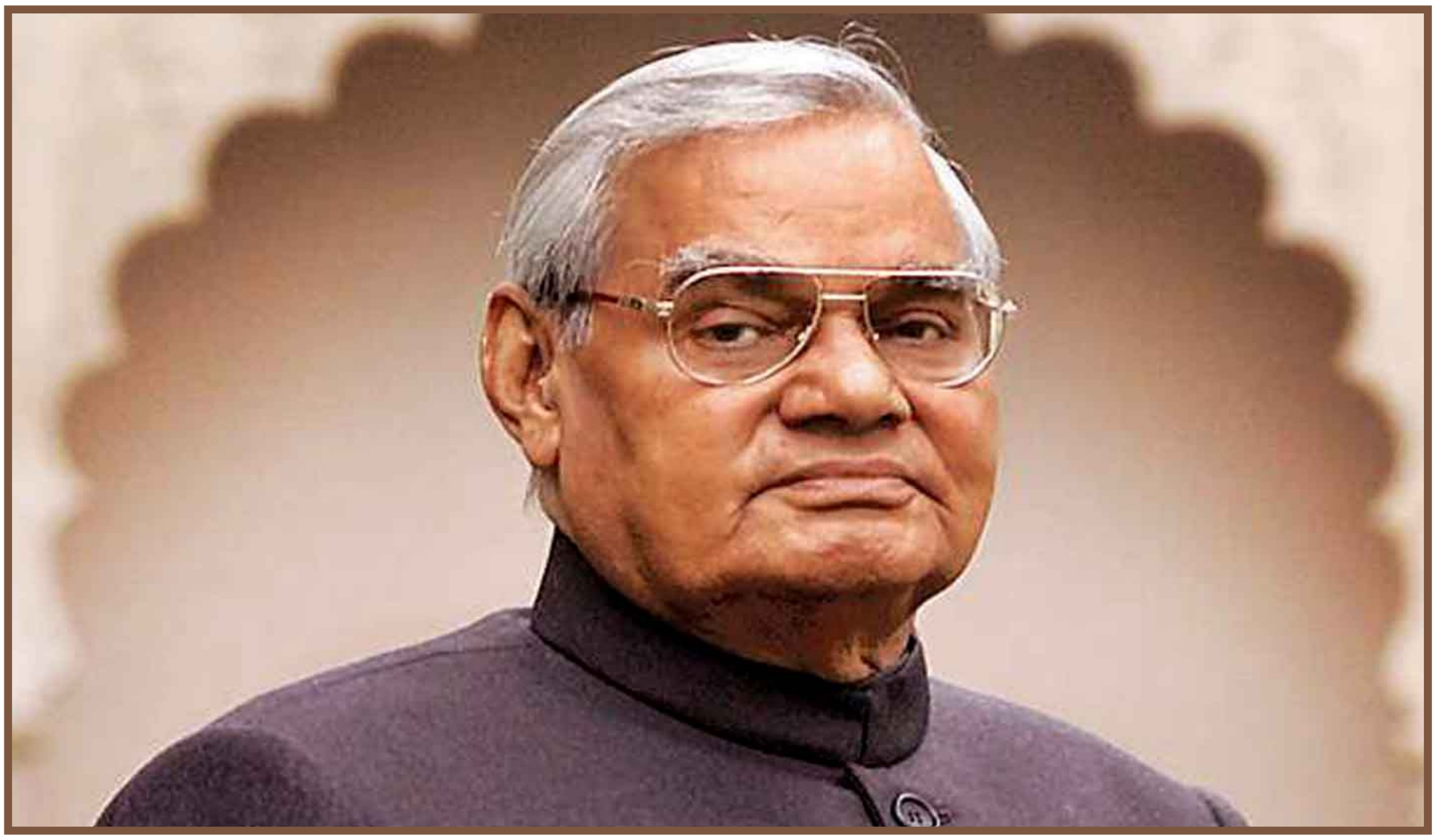

भारतीय राजनीति की बड़ी विडम्बना रही है कि आदर्श की बात सबकी जुबान पर है, पर मन में नहीं। उड़ने के लिए आकाश दिखाते हैं पर खड़े होने के लिए जमीन नहीं। दर्पण आज भी सच बोलता है पर सबने मुखौटे लगा रखे हैं। ऐसी निराशा, गिरावट व अनिश्चितता की स्थिति में वाजपेयीजी ने राष्ट्रीय चरित्र, उन्नत जीवन शैली और स्वस्थ राजनीति प्रणाली के लिए बराबर प्रयास किया। वे व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के बदलाव की सोचते रहे, साइनिंग इंडिया– उदय भारत के सपने को आकार देते रहे। उनका समूचा जीवन राष्ट्र को समर्पित एक जीवन यात्रा का नाम है– आशा को अर्थ देने की यात्रा, ढलान से ऊंचाई की यात्रा, गिरावट से उठने की यात्रा, मजबूरी से मनोबल की यात्रा, सीमा से असीम होने की यात्रा, जीवन के चक्रव्यूहों से बाहर निकलने की यात्रा। मन बार–बार उनकी तड़प को प्रणाम करता है। उस महापुरुष के मनोबल को प्रणाम करता है।

– तेजस्विता उपाध्याय (बीएजेएमसी, तृतीय वर्ष)

1 दिसंबर: विश्व एड्स दिवस

विश्व एड्स दिवस पूरी दुनिया में हर साल 1 दिसम्बर को लोगों को एड्स (एक्वायर्ड इम्युनो डेफिशियेंसी सिंड्रोम) के बारे में जागरुक करने के लिये मनाया जाता है। एड्स ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेंसी (एचआईवी) वायरस के संक्रमण के कारण होने वाला महामारी का रोग है। यह दिन सरकारी संगठनों, गैर सरकारी संगठनों, नागरिक समाज और अन्य स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा एड्स से संबंधित भाषण या सार्वजनिक बैठकों में चर्चा का आयोजन करके मनाया जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने साल 1995 में विश्व एड्स दिवस के लिए एक आधिकारिक घोषणा की जिसका अनुकरण दुनिया भर में अन्य देशों द्वारा किया गया। एक मोटे अनुमान के मुताबिक, 1981–2007 में करीब 25 लाख लोगों की मृत्यु एचआईवी संक्रमण की वजह से हुई। यहां तक कि कई स्थानों पर एंटीरेट्रोवायरल उपचार का उपयोग करने के बाद भी, 2007 में लगभग 2 लाख लोग (कुल का कम से कम 270,000 बच्चे) इस महामारी रोग से संक्रमित थे।

एचआईवीध्एड्स पर संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम, जो यूएन एड्स के रूप में भी जाना जाता है, वर्ष 1996 में प्रभाव में आया और दुनिया भर में इसे बढ़ावा देना शुरू कर दिया गया। एक दिन मनाये जाने के बजाय, पूरे वर्ष बेहतर संचार, बीमारी की रोकथाम और रोग के प्रति जागरूकता के लिये विश्व एड्स अभियान ने एड्स कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए वर्ष 1997 में यूएन एड्स शुरु किया। शुरु के सालों में, विश्व एड्स दिवस के विषयों का ध्यान बच्चों के साथ साथ युवाओं पर केन्द्रित था, जो बाद में एक परिवार के रोग के रूप में पहचाना गया, जिसमें किसी भी आयु वर्ग का कोई भी व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित हो सकता है। 2007 के बाद से विश्व एड्स दिवस को व्हाइट हाउस द्वारा एड्स रिबन का एक प्रतिष्ठित प्रतीक देकर शुरू किया गया था।

विश्व एड्स दिवस पर क्रियाएँ

लोगों में जागरुकता बढ़ाने और उस विशेष वर्ष के विषय के सन्देश को प्रसारित करने के लिये विश्व एड्स दिवस पर विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ की जाती हैं। लोगों के बीच देखभाल संगठनों, पादरी और स्थानीय एजेंसियों को उनके महान काम के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

– किसी सार्वजनिक पार्क में एक कैण्डल लाईट परेड आयोजित की जा सकती है या निकटतम एजेंसी में आयोजित गायकों, संगीतकारों, नर्तकों, कवियों, कहानी वक्ताओं और आदि मनोरंजक प्रदर्शन के माध्यम से एड्स की रोकथाम का संदेश वितरित कर सकता है।

–विश्व एड्स दिवस के बारे में जानकारी अपनी एजेंसी की वेब साइट को जोड़ने के द्वारा वितरित की जा सकती है।

–सभी की योजनाबद्ध कार्यक्रमों और गतिविधियों को पहले से ही ई–मेल, समाचार पत्र, डाक से या इलेक्ट्रॉनिक बुलेटिन के माध्यम से वितरित किया जाना चाहिए।

–लोगों को एचआईवी एड्स के लिए प्रदर्शनियों, पोस्टर, वीडियो आदि प्रदर्शित करके

विश्व एड्स दिवस समारोह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य दिन समारोह बन गया है। विश्व एड्स दिवस स्वास्थ्य संगठनों के लिए लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाने, इलाज के लिये संभव पहुँच के साथ–साथ रोकथाम के उपायों पर चर्चा करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।विश्व एड्स दिवस का इतिहास

विश्व एड्स दिवस की पहली बार कल्पना 1987 में अगस्त के महीने में थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न द्वारा की गई थी। थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न दोनों डब्ल्यू. एच.ओ.(विश्व स्वास्थ्य संगठन) जिनेवा, स्विट्जरलैंड के एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के लिए सार्वजनिक सूचना अधिकारी थे। उन्होंने एड्स दिवस का अपना विचार डॉ. जॉननाथन मन्न (एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के निदेशक) के साथ साझा किया, जिन्होंने इस विचार को स्वीति दे दी और वर्ष 1988 में 1 दिसंबर को विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाना शुरु कर दिया। उनके द्वारा हर साल 1 दिसम्बर को सही रुप में विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाने का निर्णय लिया गया। उन्होंने इसे चुनाव के समय, क्रिसमस की छुट्टियों या अन्य अवकाश से दूर मनाने का निर्णय लिया। ये उस समय के दौरान मनाया जाना चाहिए जब लोग, समाचार और मीडिया प्रसारण में अधिक रुचि और ध्यान दें सकें।

में जागरुकता बढ़ाना ही कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य है। कुछ गतिविधियाँ नीचे दी गयी है

–समुदाय आधारित व्यक्तियों और संगठनों को योजनाबद्ध बैठक के आयोजन के लिये विश्व एड्स दिवस गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिये। ये अच्छी तरह से स्थानीय क्लीनिकों, अस्पतालों, सामाजिक सेवा एजेंसियों, स्कूलों, एड्स वकालत समूहों आदि से शुरू किया जा सकता है।

–बेहतर जागरूकता के लिए वक्ताओं और प्रदर्शकों द्वारा एकल कार्यक्रम या स्वतंत्र कार्यक्रमों का एक अनुक्रम मंचों, रैलियों, स्वास्थ्य मेलों, समुदायिक कार्यक्रमों, विश्वास सेवाओं, परेड, ब्लॉक दलों और आदि के माध्यम से निर्धारित किये जा सकते हैं।

–विश्व एड्स दिवस से मान्यता प्राप्त एजेंसी बोर्ड द्वारा एक सार्वजनिक बयान को प्रस्तुत किया जा सकता है।

–स्कूलों, कार्य स्थलों या सामुदायिक समूहों के लिये लाल रिबन आशा के चिह्न के रुप में पहनना और बाँटना चाहिये। सामाजिक मीडिया के आउटलेट के लिए इलेक्ट्रॉनिक रिबन भी वितरित किया जा सकता है।

गतिविधियों (जैसे डीवीडी प्रदर्शनियाँ और एड्स की रोकथाम पर सेमिनार) व्यवसायों, स्कूलों, स्वास्थ्य जागरूक किया जा सकता है।

–विश्व एड्स दिवस की गतिविधियों के बारे में ब्लॉग,फेसबुक, ट्विटर के माध्यम से या अन्य सामाजिक मीडिया वेबसाइटों के माध्यम से लोगों के एक बड़े समूह को सूचित किया जा सकता है।

–विश्व एड्स दिवस मनाने के लिये अन्य समूह सक्रिय रूप से योगदान कर सकते हैं।

–एक मोमबत्ती की रोशनी के समारोह को एचआईवी/एड्स के कारण जिन व्यक्तियों का निधन हो गया हो की स्मृति में आयोजित किया जा सकता है।

–धार्मिक नेताओं को एड्स की असहिष्णुता के बारे में कुछ बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

–एचआईवी/एड्स से पीड़ित लोगों को सहायता प्रदान करने के लिए भोजन, आवास, परिवहन सेवा शुरू की जा सकती है। उन में नैतिकता को बढ़ाने के लिये सामाजिक कार्य, पूजा या अन्य कार्यों में आमंत्रित किया जा सकता है।

– हर्षित (बीएजेएमसी, तृतीय वर्ष)

THIS MONTH

December 18, 1956 - Japan was admitted to the United Nations.

*****

December 16, 1969 - The British House of Commons voted 343-185 to abolish the death penalty in England.

*****

December 24, 1992 - Caspar Weinberger and five other Reagan aides involved in the Iran-Contra scandal were pardoned by President George Bush.

*****

December 21, 1993 - The KGB (Soviet Secret Police) organization was abolished by Russian President Boris Yeltsin

*****

December 19, 1998 - The House of Representatives impeached President Bill Clinton, approving two out of four Articles of Impeachment, charging Clinton with lying under oath to a federal grand jury and obstructing justice.

*****

December 20, 1699 - Czar Peter the Great changed the Russian New Year from September 1 to January 1 as part of his reorganization of the Russian calendar.

*****

Compilation:
Ishita

BASICS OF MEDIA

Digital Television (dtv): Digital television systems that generally have a higher image resolution than STV (standard television). Also called advanced television (ATV).

*****

Downloading: The transfer of files that are sent in data packets. Because these packets are often transferred out of order, the file cannot be seen or heard until the downloading process is complete.

*****

Field: (1) A location away from the studio. (2) One-half of a complete scanning cycle, with two fields necessary for one television picture frame. There are 60 fields, or 30 frames, per second in standard NTSC television.

*****

Progressive Scanning: In this system the electron beam starts with line 1, then scans line 2, then line 3, and so forth, until all lines are scanned, at which point the beam jumps back to its starting position to repeat the scan of all lines.

*****

Streaming: A way of delivering and receiving digital audio and/or video as a continuous data flow that can be listened to or watched while the delivery is in progress.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Ishita

संपादक की कलम से

विवाह की उम्र में बदलाव से होगी सामाजिक सुधार की अभूतपूर्व पहल

वर्तमान समय में अनादि काल से निर्बाध चली आ रही कुछ प्रथाएं आज कुरीति के रूप में दृष्टव्य हाती दिखाई दे रही हैं। फिर चाहे वह विवाह की आयु का विषय हो, या फिर रीति रिवाजों से संबंधित अन्य प्रचलित प्रथाएं, समय के अनुसार इनको बदलना ही चाहिए, लेकिन कुछ रूढि वादी मानसिकता के व्यक्ति या इस दिशा में सक्रिय संस्थाएं ऐसे किसी परिवर्तन का विरोध करके न केवल भारतीय समाज को पीछे धकेलने का कार्य कर रहे हैं, बल्कि देश के उत्थान के मार्ग में भी अवरोधक बनकर खड़े हैं। भारतीय समाज में कई प्रकार की प्रथाएं आज पत्थर की लकीर की तरह स्थापित हो चुकी हैं, इसी कारण आज के समय में सामाजिक असमानता का बहुत बड़ा दोष पनप रहा है। इस दोष के कारण ही समाज में भेदभाव की भावना घर कर रही है। इसी कारण सामाजिक विद्वेष की भावना निर्मित होती है।

कम आयु में किसी बच्ची का विवाह करने को एक प्रकार से जीवन की बर्बादी निरूपित किया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं कही जाएगी। हालांकि आज के समय में इतनी जागरुकता तो दिखाई देती है कि देश में बाल विवाह नहीं हो रहे हैं, फिर भी अपवाद तो मिल ही जाते हैं। बाल विवाह करने का प्रचलन कब और कैसे आया, इसकी प्रामाणिक जानकारी तो नहीं है, लेकिन ऐसा सुना जाता है कि जब मुगल शासकों के अत्याचार का शिकार भारत की युवतियां और मासूम बच्चियां होने लगी थी, तब भारत समाज ने इन बच्चियों को मुगलों की कुदृष्टि से बचाने के लिए इस प्रथा को प्रारंभ किया। हालांकि इसके दुष्परिणाम भी सामने आए। जब किसी बच्ची का विवाह कम उम्र में कर दिया जाए तो यही कहा जाएगा कि उसके बच्चे भी जल्दी ही होंगे। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है कि अभी जिस बच्ची का बचपन ठीक से बीता नहीं, उसे एक और बचपन को सुरक्षित करने की जिम्मेदारी असमय ही मिल जाती है। ऐसी स्थिति में न तो वह अपना विकास कर पाती है और न ही मासूम बच्चे की ठीक प्रकार से परवरिश ही कर पाती है। जिससे दोनों ही शारीरिक रूप से विकसित नहीं हो पाते।

भारत की संस्कृति में बच्चियों को देवी के रूप में देखने की परंपरा रही है, जो आज भी दृष्टिगोचर होती है। प्रत्येक नवरात्रि पर्व पर बच्चियों में देवी के दर्शन होते हैं। इसलिए ही भारत के दर्शन में कहा जाता है कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवताओं का वास होता है। इसका आशय यही है कि उस देश में देव संस्कृति का प्रवाह अविरल रूप से प्रवाहित होता रहता है। ऐसी स्थिति में वह देश संस्कारों की सुरभित बगिया के रूप में महकती रहती है। पुरातन काल से यह मान्यता भी बनी हुई है कि किसी भी बालक की प्रथम गुरू उसकी माता होती है, लेकिन जब माता ही पूर्ण रूप से विकसित नहीं होगी तो स्वाभाविक रूप से यही कहा जा सकता है कि वह गुरू की भूमिका ठीक प्रकार से नहीं निभा सकती। इसलिए किसी भी बच्ची का विवाह उचित आयु में करने से सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं।

आज के समय का अध्ययन किया जाए तो यही परिलक्षित होता है कि एक परिवार के सदस्यों की एक ही विषय पर अलग–अलग राय होती है। अलग राय की यह शैली बाहर के वातावरण से मिलती है। जब यह शैली व्यक्ति के आचरण का हिस्सा बन जाती है, तब परिवार में विघटन की स्थितियां पैदा होती हैं। इसलिए परिवार के साथ ही देश में भी संस्कृति की रक्षा करते हुए आवश्यक सुधार भी करने चाहिए। लड़कियों की विवाह की आयु कम करने का कदम इसी दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस कदम की बहुत लम्बे समय से मांग की जा रही थी। वैसे भी आज के समय में लड़कियां स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपने लिए एक मजबूत आधार निर्मित करना चाहती हैं। इसलिए युवतियां अपने विवाह को लेकर जल्दबाजी नहीं करतीं। इसलिए समाज में देखा जा रहा है कि लड़कियां अधिक आयु में विवाह करने लगी हैं। इसमें एक खास बात यह भी है कि भारतीय संस्कृति में व्यक्तिगत जीवन के लिए चार आश्रम की व्यवस्था है, जिसमें औसत आयु सौ वर्ष मानी गई है और इसी के आधार पर विभाजन किया गया है। प्रथम 25 वर्ष ब्रह्मचर्य, द्वितीय ग्रहस्थ, तृतीय वानप्रस्थ और चतुर्थ संन्यास है। पिछले कुछ वर्षों में औसत आयु मं कमी का अनुभव किया जा रहा था, इसलिए विवाह की उम्र भी कम कर दी गई। अब लड़कियों के विवाह की आयु 21 वर्ष करने का निर्णय लिया गया है, जो युवतियों के हक में अभूतपूर्व माना जा रहा है।

हम जानते ही हैं कि हम सभी का जीवन प्राकृतिक है, प्रकृति के पंचतत्वों से निर्मित यह जीवन जब तक मर्यादित रहेगा, तब तक यह ठीक प्रकार से कार्य करता रहेगा और जब प्रकृति की अवहेलना होती है, तब स्वाभाविक रूप से यह अनिष्ट की ओर अपने कदम बढ़ाने को तत्पर हो जाता है। इसके लिए एक पौधे का उदाहरण लिया जा सकता है। पौधा नवजात होता है, कुछ समय पश्चात उसमें पत्तियां आने लगती है यानी वह अपना विकास कर रहा होता है, लेकिन फूल और फल आने की अवस्था आने के लिए प्रतीक्षा करनी होती है। एक निश्चित समय के पश्चात ही उससे फल की प्राप्ति होती है। इससे पूर्व अगर फूल और फल लगता है तो वह पूरी तरह से विकास नहीं कर सकता। इसी प्रकार हमारे शरीर की अवस्था है। युवतियों के बारे में यह पौधे से पेड़ बनने वाली स्थिति चरितार्थ होती दिखाई देती है। वर्तमान में समाज के कई परिवार अपनी लड़कियों का विवाह बहुत जल्दी कर देते हैं, जिसका खामियाजा लड़की को भुगतना होता है। केन्द्र सरकार बच्चियों के विवाह की उम्र 21 वर्ष करना एक ऐसा कदम है जो बच्चियों को सुरक्षित हक की प्राप्ति करता है। भारत सरकार से आग्रह यह भी है कि यह कानून सारे समाजों पर एक समान रूप से लागू करना चाहिए और समाज के हर वर्ग को भी इसका पूर्ण रूप से समर्थन करना चाहिए।

क्या है वेब 3.0, क्या वाकई बदलने वाला है इंटरनेट!

बेहद बड़ा और ज्वलंत प्रश्न है, जो तकनीकी दुनिया में अलग–अलग तर्कों के साथ तथ्यों के साथ चर्चित है। जी हां वेब 3.0 के बारे में कहा जा रहा है कि यह इंटरनेट को बदल देगा। आइए जानते हैं वास्तव में है क्या वेब 3.0 ।वेब 3.0 को समझने के लिए हम सबसे पहले हुए 1.0 से शुरू करते हैं। 1989 में डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू () अर्थात वर्ल्ड वाइड वेब की शुरुआत हुई और उस समय जो इंटरनेट था तब आपको सिर्फ लिखी हुई जानकारी ही मिलती थी। यानी टेक्स्ट फॉर्मेट में यहां से इंटरनेट की शुरुआत हुई। इसके बाद उद्भव हुआ वेब 2.0 का। वेब 2.0 पर आप न केवल टेक्स्ट कंटेंट बल्कि वीडियो इमेजेस की क्रांति देख सकते हैं।

और इस तरीके से वेब 2.0 एक तरह से सेंट्रलाइज इंटरनेट भी बन गया, मतलब एक तरह से यह बड़ी कंपनियों द्वारा कंट्रोल किया जाता है। जैसे कि गूगल ही मान लीजिए, अधिकतर लोग जानकारी के लिए गूगल पर जाते हैं और गूगल के प स तमाम डाटा होता है। इन डेटा में हेरफेर करना गूगल के लिए बेहद आसान है।

वहीं इस तरह के आरोप भी इन कंपनियों पर लगे हैं, और केवल गूगल ही क्यों, फेसबुक का उदाहरण आप ले लीजिए, अमेजन का उदाहरण ले लीजिए। इस तरह की तमाम बड़ी कंपनियां अपने हितों के लिए लोगों के साथ इंटरनेट पर खिलवाड़ कर सकती हैं और यह वेब 2.0 के बारे में वह बात है जो वेब 3.0 के आने की वकालत कर रहा है।

कहा जा रहा है कि अगर वेब 3.0 पूरी तरह से प्रचलन में आ गया तो फेसबुक और गूगल जैसी कंपनियां इंटरनेट पर राज नहीं कर पाएंगी। जी हां! इसमें यूजर अपने कंटेंट का मालिक होगा। वेब 3.0 में इंटरनेट को डिसेंट्रलाइज करने की बात कही जा रही है, और ऐसा माना जा रहा है, कि यह ब्लॉकचेन पर आधारित इंटरनेट होगा।

ब्लॉकचेन की बात हम सब आजकल बहुत तेजी से सुन रहे हैं, क्योंकि क्रिप्टो करेंसी इसी टेक्नोलॉजी पर आधारित है। मतलब बड़ा साफ है और वह यह है कि जिस प्रकार से क्रिप्टो करेंसी में आपके पैसे किसी बैंक में नहीं होते हैं और इसलिए बैंक के डूबने पर आप की करेंसी भी नहीं टूटती है, फ्रॉड के चांसेस भी नहीं होते हैं, उसी प्रकार से वेब 3.0 में भी ब्लॉकचेन की तरह आपका डाटा किसी एक सेंट्रल सर्वर पर ना होकर प्रत्येक यूजर के डिवाइस में होगा, किंतु वह एन्क्रिप्टेड फॉर्मेट में होगा और कोई जान नहीं पाएगा यूजर का डाटा वास्तव में रखा कहां है। ऐसे में उसमें छेड़छाड़ करना, मैनिपुलेशन करना संभव नहीं हो पाएगा। इससे बड़ी कंपनियों की मोनोपोली समाप्त हो जाएगी।

वैसे देखा जाए तो वेब 3.0 को लेकर लोग अलग–अलग राय रख रहे हैं। टेस्ला के सीईओ एलन मस्क और ट्विटर के फाउंडर जैक डोर्सी इत्यादि वेब 3.0 के पक्ष में अपने बयान नहीं देते हैं और कहते हैं कि यह हकीकत नहीं है। वहीं टेक वर्ल्ड में काफी पहले से 3.0 पर काम चल रहा है और ऐसा माना जा रहा है कि यह साइड बाय साइड चलता रहेगा, किंतु वेब 2.0 समाप्त हो जाए ऐसा भी लोग नहीं कह रहे हैं।

हालांकि टेक्नोलॉजी की दुनिया ने ऐसे बड़े बड़े बदलाव को देखा है, जिसकी कल्पना भी संभवतः किसी ने नहीं की होगी। वहीं आने वाले दिनों में अगर हुए 3.0 ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर कार्य करते हुए डिसेंट्रलाइज होता है और यूजर के पास कंट्रोल जाता है तो निश्चित रूप से यह इंटरनेट के एक्सपीरियंस को भी बदल देगा। किंतु देखना दिलचस्प होगा कि इस पर आने वाले दिनों में रिसर्च और डेवलपमेंट किस तरीके से आगे बढ़ती है।

सफल आर्थिक नीतियों से देश के नागरिकों में प्रसन्नता का संचार संभव

किसी भी देश की आर्थिक नीतियों की सफलता का पैमाना, वहां के समस्त नागरिकों में प्रसन्नता का संचार, ही होना चाहिए। कोई भी नागरिक सामान्यतः प्रसन्न तभी रह सकता है जब उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो जाती हो। आजकल शुरुआती दौर में तो रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की आसानी से प्राप्ति ही सामान्य जन को प्रसन्न रख सकती है। परंतु, यह अंतिम ध्येय नहीं हो सकता है। राष्ट्र तेजी से विकास करे, सम्पूर्ण विश्व में एक आर्थिक ताकत बन कर उभरे एवं भारत के नागरिकों की प्रति व्यक्ति आय में तीव्र गति से वृद्धि हो। साथ ही, भौतिकवाद एवं आध्यात्मवाद दोनों में समन्वय स्थापित हो तथा राष्ट्रवाद का विकास हो, भारत को अपने नागरिकों को प्रसन्न रखने के लिए इन लक्ष्यों को भी प्राप्त करना आवश्यक होगा।

भारतवर्ष की स्वतंत्रता प्राप्ति के 74 वर्षों के बाद भी, भारतीय नागरिकों को आज अपनी आवश्यक जरूरतों की पूर्ति हेतु अत्यधिक संघर्ष करना पड़ता है। कई बार तो कुछ परिवारों के लिए इस संघर्ष के बाद दो जून की रोटी जुटाना भी अत्यंत कठिन कार्य हो जाता है। अतः देश एवं राज्यों पर शासन करने वाले सत्ताधारी दलों का यह दायित्व होना चाहिए कि देश में रह रहे नागरिकों को रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराएं जायें जिससे उनके द्वारा उनके परिवार के समस्त सदस्यों का पालन पोषण आसानी से किया जा सके। भारतीय समाज में एक कहावत भी कही जाती है कि "भूखे पेट भजन ना हो गोपाला"। जब देश के नागरिकों की भौतिक आवश्यकताएं ही पूरी नहीं होंगी तो वे अध्यात्मवाद की और कैसे मुड़ेंगे? आचार्य चाणक्य जी ने तो यहां तक कहा है कि अर्थ के बिना धर्म नहीं टिकता।

आज जब हम भारतवर्ष में देखते हैं कि देश की लगभग एक चौथाई आबादी, आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने को मजबूर है, तब यह अनायास ही आभास होने लगता है कि क्या देश में आर्थिक नीतियों का क्रियान्वयन पूर्णतह सफल नहीं रहा है। श्रम करना नागरिकों का मूलभूत कर्तव्य है अतः देश में निवास कर रहे समस्त नागरिकों के लिए, सरकार की ओर से रोजगार के अधिकार की गारंटी होनी चाहिए।

देश की कुल आबादी का एक बहुत बड़ा भाग आज भी गांवों में निवास करता है। गांवों में निवास कर रहे नागरिकों के लिए रोजगार के अधिक से अधिक अवसर भी कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्रों में ही उत्पन्न किए जाने की आज आवश्यकता है। कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्रों के सम्पन्न होने पर उद्योग एवं सेवा क्षेत्रों में भी आर्थिक विकास दर में तेजी आने लगेगी।

कई विकसित देशों में प्रायः यह देखा गया है कि कृषि क्षेत्र के विकसित हो जाने के बाद ही औद्योगिक क्रांति की शुरुआत हुई है। इससे आर्थिक वृद्धि की दर में तेज गति आई है। क्योंकि, उद्योगों को कच्चा माल प्रायः कृषि क्षेत्र द्वारा ही उपलब्ध कराया जाता है। यदि कृषि क्षेत्र विकसित अवस्था प्राप्त नहीं कर पाता है तो कच्चे माल के अभाव में उस देश के उद्योगों को पनपने में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। हां, उस कच्चे माल का आयात करके तो उस तात्कालिक कमी की पूर्ति सम्भव है परंतु लम्बे समय तक आयात पर निर्भर रहना स्वदेशी औद्योगिक क्रांति के लिए यह ठीक नीति नहीं कही जा सकती। अगर देश के उद्योग अपने कच्चे माल की पूर्ति के लिए अपने देश के कृषि क्षेत्र पर अपनी निर्भरता बढ़ाते हैं तो इससे देश के ही कृषि क्षेत्र का तेज गति से विकास होगा। कृषि क्षेत्र पर निर्भर जनसंख्या की आय में वृद्धि होगी और इन्हीं उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की मांग में भी वृद्धि होगी। परिणामतः देश के विकास में स्वदेशी योगदान को बढ़ाया जा सकेगा।

भारतवर्ष में आज भी कृषि क्षेत्र के विकास की असीमित संभावनाएं मौजूद हैं। किसानों की आय बहुत ही कम है, वे अपने परिवार के सदस्यों की आवश्यक जरूरतों की पूर्ति कर पाने में भी अपने आप को असहाय महसूस कर रहे हैं। परिणामतः कुछ वर्ष पहिले तक कई जगह तो किसान आत्महत्या जैसे कठोर कदम उठाने को मजबूर होते रहे हैं। हालांकि हाल ही के वर्षों में किसानों की आर्थिक परिस्थितियों में लगातार सुधार दृष्टिगोचर है, परंतु अभी भी स्वाभाविक रूप से ग्रामीण इलाकों में निवास कर रहे नागरिकों के आर्थिक उत्थान पर ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है।

भारत में पिछले कुछ वर्षों से ग्राम विकास आधारित योजनाएं न केवल बनाई जा रही हैं बल्कि उन पर अमल भी बड़ी तेजी से किया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर कुछ योजनाओं का उल्लेख यहां किया जा सकता है। किसानों की आय दुगनी करने के उद्देश्य से किसानों को अन्नदाता से ऊर्जादाता बनाने हेतु एक योजना लायी गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में

रोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराने के लिए मच्छली पालन योजना को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत सरकार द्वारा लागू की गई कुछ योजनाओं के चलते भारतीय किसानों ने दलहन की खेती के मामले में पिछले कुछ वर्षों के दौरान क्रांतिकारी कार्य किए हैं, जिससे दलहन की उपज में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। अब भारतीय किसानों से तिलहन के क्षेत्र में भी इसी तरह के क्रांतिकारी कार्य किए जाने की उम्मीद की जा रही है ताकि तिलहन के आयात पर खर्च की जा रही बहुमूल्य विदेशी मुद्रा को बचाया जा सके। वर्ष 2024 तक ग्रामीण इलाकों के हर घर में जल पहुंचाने की व्यवस्था भी केंद्र सरकार द्वारा की जा रही है। इसके लिए अलग से "जल शक्ति मंत्रालय" बनाया गया है। प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत देश के लगभग सभी गांवों को समस्त मौसम में उपलब्ध सड़कों के साथ जोड़ दिया गया है। अब इन सड़कों को अपग्रेड किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। प्रधान मंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान भी चलाया जा रहा है, इस अभियान के अंतर्गत 2 करोड़ से अधिक ग्रामीणों को डिजिटल क्षेत्र में प्रशिक्षित किया जा चुका है। इस योजना को और अधिक जोश के साथ आगे बढ़ाया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक ग्रामीणों को डिजिटल क्षेत्र में कार्य करने हेतु प्रशिक्षित किया जा सके। इससे ग्रामीणों की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज होगी। मूल प्रश्न यह है कि केंद्र एवं राज्यों की विभिन सरकारों द्वारा तो गरीबों, किसानों, पिछड़ें वर्गों आदि के लिए कई योजनाएं बनाई जा रही हैं परंतु क्या देश का शिक्षित वर्ग एवं सामाजिक कार्यकर्ता भी इन योजनाओं को सफलता पूर्वक लागू कराने में अपना योगदान नहीं दे सकता है। जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा समाज के सभी वर्गों को आपस में जोड़ते हुए नागरिकों के स्वावलम्बन के लिए भी कार्य किया जा रहा है। उसी प्रकार देश की अन्य सामाजिक संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए एवं गरीब तबके को केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा चलायी जा रही योजनाओं की जानकारी देने एवं उनके द्वारा इन योजनाओं का लाभ उठाने हेतु मदद करनी चाहिए। देश के इस वर्ग को यदि हम आर्थिक रूप से ऊपर उठाने हेतु मदद करते हैं तो न केवल यह एक मानवीय कार्य होगा बल्कि इससे देश के कृषि क्षेत्र के साथ साथ औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्रों में भी विकास को गति मिलेगी क्योंकि यह वर्ग इन क्षेत्रों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के लिए एक बाजार के रूप में भी विकसित होगा। साथ ही, इससे देश के गरीब एवं वंचित वर्ग में भी प्रसन्नता का संचार किया जा सकेगा, जो इनका हक है।

–हिमांशु सिंह (बीएजेएमसी)

Vol. 15 **No.** 12
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Mr. Bal Krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation: Shristi

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners have dreams;
Losers have schemes.

*****

Winners see the gains;
Losers see the pain.

*****

Winners see the potential;
Losers see the past

*****

Winners make it happen;
Losers let it happen.

*****

Winners see possibilities;
Losers see problems

*****

Winners makes commitments;
Losers makes promises

*****

Winners say "I must do something";

Losers say "Something must be done".

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Shristi

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**